

NCERT SOLUTIONS FOR CLASS 6TH SANSKRIT : CHAPTER 14

पाठ का परिचय (Introduction of the Lesson)

प्रस्तुत पाठ में एक कथा है। इसमें यह बताया गया है कि एक सरल स्वभाव वाला परिश्रमी कर्मचारी एक वृद्धा के द्वारा दिए हुए विचित्र उपाय से अपने चतुर मालिक की अद्भुत शर्त पूरी कर उससे अवकाश और वेतन का पूरा पैसा पाने में सफल हो जाता है।

इस कथा द्वारा यह शिक्षा दी गई है कि परिश्रम और लगन से कठिन कार्य ही नहीं अपितु असंभव को भी संभव किया जा सकता है।

पाठ - शब्दार्थ एवं सरलार्थ

(क) अजीजः सरलः पिश्रमी च आसीत्। सः स्वामिनः एव सेवायां लीनः आसीत्। एकदा सः गृहं गंतुम् अवकाशं वाज्छिति। स्वामी चतुरः आसीत्। सः चिंतयित—"अजीजः इव न कोऽपि अन्यः कार्यकुशलः। एष अवकाशस्य अपि वेतनं ग्रहीष्यिति।" एवं चिंतयित्वा स्वामी कथयित—"अहं तुभ्यम् अवकाशस्य वेतनस्य च सर्वं धनं वास्यामि।" परम् एतवर्थं त्वं वस्तुद्यम् आनय—"अहृह! आः!" च इति।

शब्दार्थाः (Word Meanings): स्वामनः—स्वामी की (of master), सेवायां लीनः—सेवा में लीन (engaged in service), वाज्छति—चाहता/चाहती है (wants), चिंतयित—सोचता/सोचती है (thinks), ग्रहीम्थिति—लेगा/लेगी (will take), वास्यामि—दूँगा/दूँगी (shall give), आनय—लाओ (bring), एतदर्थम्—इसके लिए (for this), अहह—कष्टसूचक अव्यय (Oh!), आ:—पीडासूचक (अव्यय) (ah!)।

सरलार्थः

अजीज सरल स्वभाव वाला और मेहनती था। वह स्वामी की सेवा में ही लगा रहता था। एक बार वह घर जाने के लिए छुट्टी चाहता था। स्वामी (मालिक) चालाक था। वह सोचता है—"अजीज जैसा कोई भी दूसरा कार्य कुशल नहीं है। यह छुट्टी का भी वेतन लेगा।" यह सोचकर मालिक कहता है—"में तुम्हें छुट्टी और वेतन का सारा पैसा दूँगा।" परंतु तुम इसके लिए दो वस्तुएँ लाओ—"अहह!" और "आ:" बस यह।

English Translation:

Ajeeja was a simpleton and hardworking. He was engaged in the service of his master. Once he wanted leave for going home. The master was clever. He thinks—"There is no skilful/expert person like Ajeeja." He will take wages for (the period of)

leave also. Thinking this the master sort is the Beive ou the (total) entire amount for your leave as also your wages." But for this you bring two things—'Oh!' and 'Ah!'—that is it.

(ख) एतत् श्रुत्वा अजीजः वस्तुद्वयम् आनेतुं निर्गच्छिति। सः इतस्ततः परिभ्रमित। जनान् पृच्छिति। आकाशं पश्यिति। धरां प्रार्थयति। परं सफलतां नैव प्राप्नोति। चिंतयित, परिश्रमस्य धनं सः नैव प्राप्स्यिति। कुत्रचित् एका वृद्धा मिलति। सः तां सर्वां व्यथां श्राक्यिति। सा विचारयिति 'स्वामी अजीजाय धनं दातुं न इच्छिति।' सा तं कथयिति—"अहं तुभ्यं वस्तुद्वयम् दवािम।" परं द्वयम् एव बहुमूल्यकं वर्तते। प्रसन्नः सः स्वािमनः समीिपे आगच्छित।

शब्दार्थाः (Word Meanings): आनेत्म्—लाने के लिए (to bring), निर्मच्छिति—निकलता है (exits/comes out), इतस्ततः (इतः + ततः)—इधर-उधर- (here and there), पृच्छित-पृछ्ता है (asks), धराम्-पृथ्वी को (the earth), प्राप्स्यित—पाएगा (will get), नैव (न + एव)—नहीं (not/never), श्रावयित—सुनाता है (tells/relates), वस्तुद्धयम्—दो वस्तुएँ (two things), दवामि—देता/देती हूँ (shall give)।

सरलार्थ :

यह सुनकर अजीज दोनों वस्तुएँ लाने के लिए निकलता है। वह इधर-उधर घूमता है। लोगों से पृछवा है। आकाश को देखता है। पृथ्वी से प्रार्थना करता है। किंतु सफलता प्राप्त नहीं करता। सोचता है, परिश्रम का धन वह नहीं पा सकेगा। कहीं पर एक बुढ़िया मिलती है। वह उसे सारी व्यथा सुनाता है। वह सोचती है-"स्वामी अजीज को धन नहीं देना चाहता।" वह उसे कहती है-"मैं तुम्हें दो वस्तुएँ देती हूँ। किंतु दोनों ही कीमती (बहुमूल्य) हैं।" प्रसन्न (होकर) वह मालिक के पास जाता है।

English Translation:

Having heard this Ajeeja goes out to bring two things. He roams around here and there. He asks people. He looks at the sky. He requests the earth. But he does not get success. He thinks—'He shall never get the wages (money) of his labour.' Somewhere he meets an old woman. He tells her his pain and agony. She thinks—'The master does not wish to pay money to Ajeeja'. She says to him—'I am giving you two things. But both are precious (costly). Happily (at this) he comes back to his master.'

(ग) अजीजं दृष्ट्वा स्वामी चिकतः भवित। स्वामी श्रानैः श्रानैः पेटिकाम् उद्घाटयित। पेटिकायां लघुपात्रद्वयम् आसीत्। प्रथमं सः एकं लघुपात्रम् उद्घाटयित। सहसा एका मधुमक्षिका निर्गच्छित। तस्य च हस्तं वशित। स्वामी उच्चै ववित—"अहह!!" व्वितीयं लघुपात्रम् उद्घाटयित। एका अन्या मक्षिका निर्गच्छित। सः ललाटे दशित। पीडितः सः अत्युच्चैः चीत्करोति—"आः" इति।

अजीजः सफलः आसीत्। स्वामी तस्मै अवकाशस्य वेतनस्य च पूर्णं धनं ददाति।

LearnCBSE.in

शब्दार्था: (Word Meanings): पेटिकाम् - ऐंटि करिका, लचुपान्ह्यम् चि छोटे पात्र (two small utensils), उद्घाटयति-खोलता है (opens), मधुपस्रिका-मधुपन्रवी (honey bee), सहसा-अचानक (all of a sudden), वशाति-डसती है (bites), हस्तम्-हाथ को (hand), लालाटे-मस्तक पर (on forehead), उच्चै:-जोर से (loudly), चीत्करोति-चिल्लाता है (cries out)।

सरलार्थ :

अजीज को देखकर स्वामी चिंकत होता है। स्वामी धीरे-धीरे पेटी खोलता है। पेटी में दो छोटे पात्र (बरतन) थे। पहले वह एक छोटा पात्र खोलता है। सहसा एक मधुमक्खी निकलती है और उसके हाथ को इसती है। मालिक जोर से बोल उठता है—अहह (अरे!)। दूसरा छोटा पात्र खोलता है। एक दूसरी मक्खी निकलती है। वह मस्तक पर इसती है। व्यथित (होकर) वह बहुत जोर से चिल्लाता है-'आ:' ऐसा। अजीज सफल हुआ। स्वामी उसे (उसके लिए) अवकाश और वेतन के पूरे पैसे देता है।

English Translation:

Having seen Ajeeja Master gets surprised. Master opens the box slowly. There were two small pots in the box. First he opens one small pot. Suddenly a honey bee comes out of it and bites on his arm. He loudly says, "AHH!" Now he opens the other small pot. Another bee comes out. She bites on his forehead. Afflicted with pain he cries loudly, "AAH!"

Ajeej became successful. Master gave him total amount for his leave and wages.

– • अभ्यास: (Exercise) • ——

प्रश्नः 1. विलोमपवानि योजयत — (निम्निलिखित पदों का उचित अर्थों से मिलान कीजिए – Match the words given below with their appropriate meanings.)

क	ख	
हस्ते	अकस्मात	
सद्य:	पृथ्वीम्	
सहसा	गगनम्	
धनम्	शीघ्रम्	
आकाशम्	करे	
धराम्	द्रविणम्	

उत्तरम्– हस्ते – करे; सद्यः – शोघ्रम् ; सहसा – अकस्मात् ; धनम् – द्रविणम् ; आकाशम् – गगनम् ; धराम् – पृथ्वीम्।

प्रशन: 2. मञ्जूषात: उचितं विलोमपदं चित्वा लिखत- (मञ्जूषा से उचित विलोमपद चुनकर लिखिए-Pick out the appropriate antonyms from the box and write.)

LearnCBSE.in

्र संस्कृत–VI

	ोवकः मूर्खः		
(क) चतुरः		***************************************	
(ख) आनेतुम्			
(ग) निर्गच्छिति (घ) स्वामी			
(ङ) प्रसन्नः			
(च) उच्चै:		***************************************	
डत्तरम् - (क) चतुर: - (ङ) प्रसन्न: -	मूर्ख: (ख) आनेतुम् - - दु:खित: (च) उच्चै	- नेतुम् (ग) निर्गच्छति : - नीचैः।	। – गच्छति (घ) स्वामी – सेवक
			 (मञ्जूषा से उचित अव्यय पद
चुनकर रिक्त and fill in t		out the appropriat	te indeclinable from the box
इव अपि	एव च	उच्चै:	
(क) बालकाः	बालिकाः	क्रीडाक्षेत्रे क्रीडन्ति	ı
	गर्जन्ति।		
(ग) बक: हं	प: " श्वे	त: भवति।	
	जयते।		
	मि, त्वम्		
उत्तरम्- (क) च (ख)			
	i प्रश्नानाम् उत्तर लि g questions.)	खत— (।नम्नालाखतः	प्रश्नों के उत्तर लिखिए- Answer
	ष्ट्र पुरावडाराजाजात. गृहं गन्तुं किं वाञ्छति	?	
(ख) स्वामी ग	र्खः आसीत् चतुरः वा		
	कांव्यथां श्रावयति?		
	क्षिका कुत्र दशति? मजीजाय किंदातुंन इ	च्छति?	
उत्तरम्— (क) अजीजः			
(ख) स्वामी '	वतुर: आसीत्।		
		i, वृद्धां च सर्वा व्यथां	श्रावयति।
	क्षिका ललाटे दशति।	रं च जानं च जन्मनि।	
(ङ) स्वामा	अजीजाय अवकाशं वेत	I earnCB	SE.in _{अहह आः च 🏨}
प्रश्नः ५. निर्देशानुसा	ः लकारपारवतन कु	रुतLe£सॉग⊕B	🔂 पीरवर्तन कीजिए– Change
tense as यथा- अ	per directions.) जीज: परिश्रमी आसीत्।	। (लट्लकारे)	क्रियः पिरिवर्तन कीजिए- Change अजीजः परिश्रमी अस्ति।
tense as यथा- अ (क) अहं	per directions.) जीज: परिश्रमी आसीत्। शक्षकाय धनं ददामि।	। (लट्लकारे) (लृटलकारे)	
tense as यथा - अ (क) अहं (ख) परिश्र	per directions.) जीज: परिश्रमी आसीत्। शक्षकाय धनं ददामि। गी जन: धनं प्राप्स्यति।	। (लट्लकारे) (लृटलकारे) (लट्लकारे)	
tense as यथा — अ (क) अहं (ख) परिश्र (ग) स्वामी	oer directions.) जीज: परिश्रमी आसीत्। शेक्षकाय धनं ददामि। गी जन: धनं प्राप्स्यित। उच्चै: वदति। (लङ्ख्	। (लट्लकारे) (लृटलकारे) (लट्लकारे) तकारे)	
tense as यथा — अ (क) अहं (ख) परिश्र (ग) स्वामी (घ) अजीर	per directions.) जीज: परिश्रमी आसीत्। शेक्षकाय धनं ददामि। गी जन: धनं प्राप्स्यति। उच्चै: वदति। (लङ्ह् ा: पेटिकां गृहणाति। (। (लद्लकारे) (लृटलकारे) (लद्लकारे) तकारे) लृद्लकारे)	
tense as যথা –	oer directions.) भीजः परिश्रमी आसीत्। शिक्षकाय धनं ददामि। गी जनः धनं प्राप्स्यित। उच्चैः वदति। (लङ्ह् ाः पेटिकां गृहणाति। (ं	। (लट्लकारे) (लट्लकारे) (लट्लकारे) तकारे) लट्लकारे) कारे).	अजीजः परिश्रमी अस्ति।
tense as	oer directions.) भीजः परिश्रमी आसीत्। शिक्षकाय धनं ददामि। गी जनः धनं प्राप्स्यित। उच्चैः वदति। (लङ्ह् ाः पेटिकां गृहणाति। (उच्चैः पठिस। (लोट्ल शिक्काय धनं दास्यामि।	। (लट्लकारे) (लट्लकारे) (लट्लकारे) नकारे) लट्लकारे) कारे) , (ख) परिश्रमी जन:	अजीजः परिश्रमी अस्ति।
tense as यथा — अ (क) अहं (ख) परिश्र (ग) स्वामी (घ) अजीः (ङ) त्वम् उत्तरम् — (क) अहं । (ग) स्वामी	per directions.) भीजः परिश्रमी आसीत्। शेक्षकाय धनं ददामि। गी जनः धनं प्राप्ट्यित। उच्चैः वदति। (लङ्क् ाः पेटिकां गृहणाति। (उच्चैः परिकां (लोट्ल शेक्षकाय धनं दास्यामि। उच्चैः पठिस। (लोट्ल शेक्षकाय धनं दास्यामि। उच्चैः अवदत्।,	। (लट्लकारे) (लट्लकारे) (लट्लकारे) तकारे) लट्लकारे) कारे).	अजीजः परिश्रमी अस्ति।
tense as यथा — अ (क) अहं (ख) परिश्र (ग) स्वामी (घ) अजीत (ङ) लम् उत्तरम् — (क) अहं । (ग) स्वामी (ङ) लम्	per directions.) जीजः परिश्रमी आसीत्। शेक्षकाय धनं ददामि। गी जनः धनं प्राप्स्यति। उच्चैः वदति। (लङ्क् ाः पेटिकां गृहणाति। (ं उच्चैः पर्वसि। (लोट्ल रोधकाय धनं दास्यामि। उच्चैः पर्वसि। (लोट्ल रोधकाय धनं दास्यामि। उच्चैः अवदत्।,	। (लट्लकारे) (लट्लकारे) (लट्लकारे) नकारे) लट्लकारे) कारे) , (ख) परिश्रमी जन: (घ) अजीज: पेटिव	अजीजः परिश्रमी अस्ति।
tense as	per directions.) जीजः परिश्रमी आसीत्। शेक्षकाय धनं ददामि। गी जनः धनं प्राप्स्यति। उच्चैः चदति। (लङ्ख् ाः पेटिकां गृहणाति। (ं उच्चैः पर्वसि। (लोट्ल शेष्ककाय धनं दास्यामि। उच्चैः अवदत्।, उच्चैः पठ। नि वाक्यानि घटनाक्र	। (लट्लकारे) (लट्लकारे) (लट्लकारे) तकारे) लट्लकारे) कारे) , (ख) परिश्रमी जन: (घ) अजीज: पेटिव	अजीजः परिश्रमी अस्ति।
tense as यथा — अ (क) अहं (ख) परिश्र (ग) स्वामी (घ) अजीर (ङ) त्वम् उत्तरम् — (क) अहं । (ग) स्वामी (ङ) त्वम् प्रशनः 6. अधोलिखित अनुसार लिं	per directions.) जीजः परिश्रमी आसीत्। शेक्षकाय धनं ददामि। गी जनः धनं प्राप्स्यति। उच्चैः चदति। (लङ्ख् ाः पेटिकां गृहणाति। (ं उच्चैः पर्वसि। (लोट्ल शेष्ककाय धनं दास्यामि। उच्चैः अवदत्।, उच्चैः पठ। नि वाक्यानि घटनाक्र	। (लट्लकारे) (लट्लकारे) (लट्लकारे) कारे) कारे) , (ख) परिश्रमी जन: (घ) अजीज: पेटिट	अजीजः परिश्रमी अस्ति। धर्न प्राप्नोति। हां ग्रहीच्यति। निम्नालिखित बाक्यों को घटनाक्रम के
tense as	per directions.) जीज: परिश्रमी आसीत्। रीखकाय धनं ददामि। रीजन: धनं प्राप्स्यित। उच्चै: वदित। (लङ्क् र: पेटिकां गृह्णाति। (ं उच्चै: पठिस। (लोट्ल राधकाय धनं दास्यामि। उच्चै: अवदत्।, उच्चै: पट। नि वाक्यानि घटनाक्र व्यप— Write the fol	। (लट्लकारे) (लट्लकारे) (लट्लकारे) तकारे) लट्लकारे) कारे) , (ख) परिश्रमी जन: (ख) परिश्रमी जन: (घ) अजीज: पेटिव	अजीजः परिश्रमी अस्ति। धर्न प्राप्नोति। हां ग्रहीच्यति। निम्नालिखित बाक्यों को घटनाक्रम के
tense as यथा — अ (क) अहं (ख) परिश्र (ग) स्वामी (घ) अजीत (ङ) त्वम् उत्तरम् — (क) अहं । (ग) स्वामी (ङ) त्वम् प्रश्न: 6. अधोलिखित अनुसार लिं оссиг.) (क) अजीज (ख) एकदा	per directions.) भीजः परिश्रमी आसीत्। भीजः परिश्रमी आसीत्। भीजनः भनं प्राप्याति। उच्चैः चदित। (लङ्क् उच्चैः पदिस। (लोट्ल शक्षकाय धनं दास्यामि। उच्चैः पठाः ज्वैः पठाः नि वाक्यानि घटनाव्र उपः Write the fol	। (लट्लकारे) (लट्लकारे) (लट्लकारे) तकारे) लट्लकारे) कारे) , (ख) परिश्रमी जन: (ख) परिश्रमी जन: (घ) अजीज: पेटिव	अजीजः परिश्रमी अस्ति। धर्न प्राप्नोति। हां ग्रहीच्यति। निम्नालिखित बाक्यों को घटनाक्रम के
tense as यथा — अ (क) अहं (ख) परिश्र (ग) स्वामी (घ) अजीव उत्तरम् — (क) अहं । (ग) स्वामी (ङ) त्वम् प्रश्न: 6, अधोलिखित अनुसार लिं оссиг.) (क) अजीव (ख) एकदा (ग) अजीव	per directions.) जीजः परिश्रमी आसीत्। शिक्षकाय धनं ददामि। जी जनः धनं प्राप्स्यित। उच्चैः चदित। (लाङ्ह् शिक्षकाय धनं दास्यामि। उच्चैः पउसि। (लोट्ल शिक्षकाय धनं दास्यामि। उच्चैः अवदत्।, उच्चैः पठ। नि वाक्यानि घटनाद्वः ब्राप् Write the fol सरलः परिश्रमी च 3 सः गृहं गन्तुम् अवकाः	। (लट्लकारे) (लट्लकारे) (लट्लकारे) तकारे) लट्लकारे) कारे) , (ख) परिश्रमी जन: (ख) परिश्रमी जन: (घ) अजीज: पेटिव	अजीजः परिश्रमी अस्ति। धर्न प्राप्नोति। हां ग्रहीच्यति। निम्नालिखित बाक्यों को घटनाक्रम के
tense as यथा — अ (क) अहं (ख) परिश्र (ग) स्वामी (ख) जंते (ख) क्वा उत्तरम् — (क) अहं । (ग) स्वामी (ङ) त्वम् प्रश्न: 6. अधोतिश्वत अनुसार लि оссиг.) (क) अजीज (ख) एकदा (ग) अजीज (ख) एकदा (ग) अजीज (ख) एकदा	per directions.) भीजः परिश्रमी आसीत्। भीजः परिश्रमी आसीत्। भीजनः धनं प्राप्याति। उच्चैः चदित। (लङ्क् गिर्मेटकां गृहणाति। (उच्चैः पठिकां गृहणाति। (उच्चैः पठिकां गृहणाति। (उच्चैः पठस। (लोट्ल शक्षकाय धनं दास्यामि। उच्चैः अवदत्।, उच्चैः पठ। नि वाक्यानि घटनाद्गः अप- Write the fol स्यानः परिश्रमी च 3 सः गृहं गन्तुम् अवकाः ः पंटिकाम् आनयति। स्वामिनं दशतः। स्वामी अत्युच्चैः चीतः	। (लट्लकारे) (लट्लकारे) (लट्लकारे) तकारे) ल्ट्लकारे) कारे) , (ख) परिश्रमी जन: (घ) अजीज: पेटिट स्मानुसारं लिखत — (i llowing sentences : सासीत्। रां वाञ्छति।	अजीजः परिश्रमी अस्ति। धर्न प्राप्नोति। हां ग्रहीच्यति। निम्नालिखित बाक्यों को घटनाक्रम के
tense as	per directions.) ज्ञीजः परिश्रमी आसीत्। शेशिक्षकाय धनं ददामि। ग्री जनः धनं प्राप्स्यित। ग्रच्चैः वदित। (लङ्क् ग्रं प्रंटिकां गृह्णाति। (ं ग्रच्चैः पठिस। (लोट्ल शेश्वकाय धनं दास्यामि। ग्रच्चैः अवदत्।, ग्रच्चैः पठिस। नि वाक्यानि घटनाव्रः व्यप् Write the fol ः सरलः परिश्रमी च अ सः गृहं गन्तुम् अवकाः ः पंटिकाम् आनयति। स्वामिनं दशतः। स्वामिनं दशतः। स्वामी अत्युच्चैः चीत् अजीजाय अवकाशस्य	। (लट्लकारे) (लट्लकारे) (लट्लकारे) कारे) कारे) (घ) अजीज: पेटिट स्मानुसार लिखत – (र्रं llowing sentences	अजीज: परिश्रमी अस्ति। धर्न प्राप्नोति। र्घा प्रहीष्यति। निर्नालिखित वाक्यों को घटनाक्रम के in the order of events as they
tense as प्रथा – अ (क) अहं (ख) परिश्र (ग) स्वामी (घ) अजीः (ङ) लग् उत्तरम् – (क) अहं । प्रश्न: 6. अधोलिखकः अनुसार लि оссиг.) (क) अजीज (ख) एकदा (ग) अजीज (घ) प्रक्वा (घ) मिक्षके (ङ) पीडित (च) स्वामी उत्तरम् – (क) अजीज	per directions.) भीजः परिश्रमी आसीत्। भीजः परिश्रमी आसीत्। भीजनः धनं ददामि। भीजनः धनं प्राप्स्यति। उच्नैः चदति। (लङ्क् गः पेटिकां गृहणाति। (ं उच्नैः पठसि। (लोट्ल शक्षकाय धनं दास्यामि। उच्नैः अवदत्।, उच्नैः पठ। नि वाक्यानि घटनाक्र वयप Write the fol ः सरलः परिश्रमी च अ सः गृहं गन्तुम् अवकाः ः पंटिकाम् आनयति। स्वामिनं दशतः। स्वामी अत्युच्नैः चील् अजीजाय अवकाशस्य ः सरलः परिश्रमी च अ	। (लट्लकारे) (लट्लकारे) (लट्लकारे) तकारे) ल्टलकारे) कारे) , (ख) परिश्रमी जन: (घ) अजीज: पेटिव स्मानुसारं लिखत — (1) llowing sentences सासीत्। क्ष्में वाञ्छीत। पूर्ण धर्म ददाति। ।सित्।, (ख) एकदाः	अजीज: परिश्रमी अस्ति। थनं प्राप्नोति। हो ग्रहीष्यति। निम्निलिखित वाक्यों को घटनाक्रम के in the order of events as they
tense as यथा — अ (क) अहं (ख) परिश्र (ग) स्वामी (घ) अजीत (ङ) त्वम् उत्तरम् — (क) अहं । (ग) स्वामी (ङ) त्वम् प्रश्न: 6. अधोलिखित अनुसार लिं оссиг.) (क) अजीव (ख) एकदा (ग) अजीज (घ) मिक्षिक (ङ) पीडित (च) स्वामी उत्तरम् — (क) अजीव (ग) अजीज (ग) अजीज (ग) अजीज	per directions.) ज्ञीजः परिश्रमी आसीत्। शेर्यक्षकाय धनं ददामि। ग्री जनः धनं प्राप्स्यति। उच्चैः वदति। (लङ्क् ग्रंः पेटिकां गृह्णाति। (उच्चैः पठिस। (लोट्ल शेर्यकाय धनं दास्यामि। उच्चैः अवदत्।, उच्चैः पठिस। (लोट्ल श्रंयप— Write the fol ः सरलः परिश्रमी च अ सः गृहं गन्तुम् अवकाः ः पेटिकाम् आनयति। स्वामिनं दशतः। स्वामी अल्युच्चैः चील अजीजाय अवकाशस्य सरलः परिश्रमी च अ पेटिकाम् आनयति। स्वाम् आनयति।	। (लट्लकारे) (लट्लकारे) (लट्लकारे) कारे) ल्ट्लकारे) कारे) (घ) अजीज: पेटिट अजीज: प्राम्मिके अजीज: प्राम्मिके (घ) पक्षिके	अजीज: परिश्रमी अस्ति। धर्न प्राप्नोति। र्हा ग्रहीच्यति। निम्नलिखित वाक्यों को घटनाक्रम के in the order of events as they स: गृहं गेर्तु अवकाशं वाज्छित। स्वामिन दशतः।
tense as यथा — अ (क) अहं (ख) परिश्र (ग) स्वामी (घ) अजीत (ङ) त्वम् उत्तरम् — (क) अहं । (ग) स्वामी (ङ) त्वम् प्रश्न: 6. अधोलिखित अनुसार लिं оссиг.) (क) अजीव (ख) एकदा (ग) अजीज (घ) मिक्षिक (ङ) पीडित (च) स्वामी उत्तरम् — (क) अजीव (ग) अजीज (ग) अजीज (ग) अजीज	per directions.) ज्ञीजः परिश्रमी आसीत्। शेर्यक्षकाय धनं ददामि। ग्री जनः धनं प्राप्स्यति। उच्चैः वदति। (लङ्क् ग्रंः पेटिकां गृह्णाति। (उच्चैः पठिस। (लोट्ल शेर्यकाय धनं दास्यामि। उच्चैः अवदत्।, उच्चैः पठिस। (लोट्ल श्रंयप— Write the fol ः सरलः परिश्रमी च अ सः गृहं गन्तुम् अवकाः ः पेटिकाम् आनयति। स्वामिनं दशतः। स्वामी अल्युच्चैः चील अजीजाय अवकाशस्य सरलः परिश्रमी च अ पेटिकाम् आनयति। स्वाम् आनयति।	। (लट्लकारे) (लट्लकारे) (लट्लकारे) कारे) ल्ट्लकारे) कारे) (घ) अजीज: पेटिट अजीज: प्राम्मिके अजीज: प्राम्मिके अजीज: प्राम्मिके	अजीज: परिश्रमी अस्ति। थनं प्राप्नोति। हो ग्रहीष्यति। निम्निलिखित वाक्यों को घटनाक्रम के in the order of events as they
tense as	per directions.) जीजः परिश्रमी आसीत्। प्रीक्षकाय धनं ददामि। गी जनः धनं प्राप्स्यित। उच्चैः वदित। (लङ्क् गः पेटिकां गृहणाति। (उच्चैः पर्वसि। (लोट्ल रोधकाय धनं दास्यामि। उच्चैः अवदत्।, उच्चैः पर्वसि। (लोट्ल रोधकाय धनं दास्यामि। उच्चैः अवदत्।, उच्चैः परा। नि वाक्यानि घटनाव्रः वय — Write the fol ः सरलः परिश्रमी च अ सः गृहं गन्तुम् अवकाः ः पेटिकाम् आनयति। स्वामिनं दशतः। स्वामी अल्युच्चैः चीलः अजीजाय अवकाशस्य ः सरलः परिश्रमी च अ पेटिकाम् आनयति।, स्वामी अल्युच्चैः चीलः	। (लट्लकारे) (लट्लकारे) (लट्लकारे) तकारे) ल्टलकारे) कारे) , (ख) परिश्रमी जनः (घ) अजीजः पेटिव अजीजः अज	अजीजः परिश्रमी अस्ति। धर्म प्राप्नोति। हां ग्रहीष्यति। निप्नलिखित वाक्यों को घटनाक्रम के in the order of events as they सः गृहं गंतुं अवकाशं वाज्यति। स्वामिनं दशतः! अजीजाय अवकाशस्य पूर्णं धनं ददाति।
tense as यथा — अ (क) अहं (ख) परिश्र (ग) स्वामी (घ) अऔर (ङ) त्वम् उत्तरम् — (क) अहं । (ग) स्वामी (ङ) त्वम् प्रश्न: 6, अधोलिखित अनुसार लि occur.) (क) अजीज (ख) एकदा (ग) अजीज (घ) मिक्षेके (ङ) पीडित (च) स्वामी उत्तरम् — (क) अजीज (ग) अजीज (ग) अजीज (ग) अजीज (ङ) पीडित:	per directions.) जीजः परिश्रमी आसीत्। प्रीक्षकाय धनं ददामि। गी जनः धनं प्राप्स्यति। उच्चैः वदति। (लङ्क् गाः पेटिकां गृह्णाति। (उच्चैः पठिस। (लोट्ल शक्षकाय धनं दास्यामि। उच्चैः अवदत्।, उच्चैः अवदत्।, उच्चैः पठाः नि वाक्यानि घटनाव्रः व्यप् — Write the fol ः सरलः परिश्रमी च अ सः गृहं गन्तुम् अनकाः ः पेटिकाम् आनयति। स्वामिनं दशतः। स्वामी अल्युच्चैः चीलः अजीजाय अवकाशस्य सरलः परिश्रमी च अ पेटिकाम् आनयति।, स्वामी अल्युच्चैः चीलः असिताः। स्वामी अल्युच्चैः चीलः असिताः। स्वामी अल्युच्चैः चीलः	। (लट्लकारे) (लट्लकारे) (लट्लकारे) तकारे) ल्टलकारे) कारे) , (ख) परिश्रमी जनः (घ) अजीजः पेटिव अजीजः अज	अजीजः परिश्रमी अस्ति। धर्म प्राप्नोति। हां ग्रहीष्यति। निन्नलिखित वाक्यों को घटनाक्रम के in the order of events as they सः गृहं गतुं अवकाशं वाञ्छति। स्वामिनं दशतः! अजीजाय अवकाशस्य पूर्णं धर्म ददाति। सहायता से मद्यांश पूरा कीजिए।
tense as यथा — अ (क) अहं (ख) परिश्र (ग) स्वामी (घ) अजीत (ङ) त्वम् उत्तरम् — (क) अहं । (ग) स्वामी (ङ) त्वम् प्रश्न: 6. अधोलिखित अनुसार लि occur.) (क) अजीव (ख) एकदा (ग) अजीज (घ) मिक्षके (ङ) पीडित (च) स्वामी उत्तरम् — (क) अजीव (ख) एकदा (ग) अजीज (छ) पीडित (ग) अजीज (ङ) पीडित: (ग) मञ्जूषायाः Complete	per directions.) जीजः परिश्रमी आसीत्। प्रीक्षकाय धनं ददामि। गी जनः धनं प्राप्स्यति। उच्चैः वदति। (लङ्क् गाः पेटिकां गृह्णाति। (उच्चैः पठिस। (लोट्ल शक्षकाय धनं दास्यामि। उच्चैः अवदत्।, उच्चैः पठिस। (लोट्ल शक्षकाय धनं दास्यामि। उच्चैः अवदत्।, उच्चैः पर। नि वाक्यानि घटनाव्र व्यप— Write the fol ः सरलः परिश्रमी च अ सः गृहं गन्तुम् अवकाः ः पेटिकाम् आनयति। स्वामिनं दशतः। स्वामी अल्युच्चैः चील अजीजाय अवकाशस्य सरलः परिश्रमी च अ पेटिकाम् आनयति। स्वामी अल्युच्चैः चील अपिकाम् आनयति। स्वामी अल्युच्चैः चील	। (लट्लकारे) (लट्लकारे) (लट्लकारे) कारे) ल्ट्लकारे) कारे) , (ख) परिश्रमी जनः (घ) अजीजः पेटिट अजीजः पेटिट अजीजः पेटिट अजीजः पेटिट अजीजः पेटिट अजीजः पेटिट अगिता होति। हो वाञ्छीत। करोति। (घ) पश्चिक हरोति।, (ख) एकदा (घ) पश्चिक हरोति।, (च) स्वामी स्वान	अजीजः परिश्रमी अस्ति। धर्म प्राप्नोति। हां ग्रहीष्यति। निन्नलिखित वाक्यों को घटनाक्रम के in the order of events as they सः गृहं गतुं अवकाशं वाञ्छति। स्वामिनं दशतः! अजीजाय अवकाशस्य पूर्णं धर्म ददाति। सहायता से मद्यांश पूरा कीजिए।
tense as यथा — अ (क) अहं (ख) परिश्र (ग) स्वामी (घ) अजीत (ङ) त्वम् उत्तरम् — (क) अहं । (ग) स्वामी (ङ) त्वम् प्रश्न: 6. अधोलिखित अनुसार लि occur.) (क) अजीव (ख) एकदा (ग) अजीज (घ) मिक्षके (ङ) पीडित (च) स्वामी उत्तरम् — (क) अजीव (ख) एकदा (ग) अजीज (छ) पीडित (ग) अजीज (ङ) पीडित: (ग) मञ्जूषायाः Complete	per directions.) जीजः परिश्रमी आसीत्। प्रीक्षकाय धनं ददामि। गी जनः धनं प्राप्स्यति। उच्चैः वदति। (लङ्क् गाः पेटिकां गृह्णाति। (उच्चैः पठिस। (लोट्ल शक्षकाय धनं दास्यामि। उच्चैः अवदत्।, उच्चैः पठिस। (लोट्ल शक्षकाय धनं दास्यामि। उच्चैः अवदत्।, उच्चैः पर। नि वाक्यानि घटनाव्र व्यप— Write the fol ः सरलः परिश्रमी च अ सः गृहं गन्तुम् अवकाः ः पेटिकाम् आनयति। स्वामिनं दशतः। स्वामी अल्युच्चैः चील अजीजाय अवकाशस्य सरलः परिश्रमी च अ पेटिकाम् आनयति। स्वामी अल्युच्चैः चील अपिकाम् आनयति। स्वामी अल्युच्चैः चील	। (लट्लकारे) (लट्लकारे) (लट्लकारे) कारे) ल्ट्लकारे) कारे) , (ख) परिश्रमी जनः (घ) अजीजः पेटिट अजीजः पेटिट अजीजः पेटिट अजीजः पेटिट अजीजः पेटिट अजीजः पेटिट अगिता होति। हो वाञ्छीत। करोति। (घ) पश्चिक हरोति।, (ख) एकदा (घ) पश्चिक हरोति।, (च) स्वामी स्वान	अजीजः परिश्रमी अस्ति। धर्म प्राप्नोति। हां ग्रहीच्यति। तिप्नलिखित वाक्यों को घटनाक्रम के in the order of events as they सः गृहं गंतुं अवकाशं वाञ्छति। स्वामिनं दशतः! अजीजाय अवकाशस्य पूर्णं धनं ददाति। सहायता से मद्यांश पूरा कीजिए। ८) दास्यामि, परिश्रमी, चतुरः

1 care CBSE in					
अजीजः सरलःच आसीस् प्रदासान्दि BSE: 17 लीनः आसीत्। एकदा					
सः गृहं गंतुम् "वाञ्छति। स्वामी "आसीत्। सः चिंतराति-"अजीजः					
ं चिंतयित्वा स्वामी कथयति-"अहं तुम्यम् अवकाशस्य वेतनस्य च सर्वं धनं ····· ।" परम् एतदर्थं त्वं वस्तुद्वयम् ······ ।					
उत्तरम् – परिश्रमी, सेवायाम्, अवकाशम्, चतुरः, इव, अवकाशस्य, एवम्, दास्यामि, आनय।					
(2) गद् यांश पठित्वा अधोदत्तान् प्रश्नान् उत्तरत। (गद्गांश पढ़ कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर					
दीजिए। Read the extract and answer the following questions.)					
अजीजं दृष्ट्वा स्वामी चिकतः भवति। स्वामी शनैः शनैः पेटिकाम् उद्घाटयति। पेटिकार्या					
लघुपात्रद्वयम् आसीत्। प्रथमं सः एकं लघुपात्रम् उद्घाटयति। सहसा एका मधुमक्षिका निर्गच्छति।					
तस्य च हस्तं दशति। स्वामी उच्चै वदति—"अहङ्!!" द्वितीय लघुपात्रम् उद्घाटयति। एका अन्या मक्षिका निर्गच्छति। सः ललाटे दशति। पीडित: सः अत्युच्चैः चीत्करोति—"आः" इति।					
अजीज: सफल: आसीत्। स्वामी तस्मै अवकाशस्य वेतनस्य च पूर्णं धनं ददाति।					
. एकपदेन उत्तरत-					
(i) अजीजं दृष्ट्वा कः चिकतः?					
(ii) स्वामी काम् उद्घाटयति?					
(iii) लघुपात्रद्यम् कस्याम् आसीत्?					
(iv) पात्रात् का निर्गच्छति?					
उत्तरम्- (i) स्वामी (ii) पेटिकाम्					
(iii) पेटिकायाम् (iv) मधुमक्षिका					
II. पूर्णवाक्येन उत्तरत-					
(1) अन्या मधुमक्षिका किं करोति?					
(ii) तदा स्वामी किं करोति?					
उत्तरम्− (i) अन्या मधुमक्षिका ललाटे दशति।					
(ii) तदा स्वामी अत्युच्यै: (अति + उच्चै:) चीत्करीति।					
III. भाषिककार्यम्—					
1. नीचै: इति पदस्य विलोमं लिखत।					
2. विस्मितः इति पदस्य पर्यायं लिखत।					
3. यथानिर्देश रिक्तस्थानि पूरयत। यथा-					
(क) एकं लघुपात्रम्। (ख) मधुमक्षिका निर्मच्छति। मधुमक्षिकाः निर्मच्छति। (¿) सा दशति।					
(i) पिटका। (i) सा दशति। । (ii) सेवकः। (ii) सः उद्घाटयति। ।					
Loorn CRSE in					
LearnCBSE.in					
*					
4. (क) लङ्लकारे परिवर्तयत। Leara लि डिलिटि परिवर्गयत।					
4. (क) लङ्लकारे परिवर्तयत। Leajaj ල <mark>ැම कि</mark> र्मास्कृतयत। (i) स्वामी चकित: भवति। (i) स्वामी चीत्कारं करोति।					
 (क) लङ्लकारे परिवर्तयत।					
4. (क) लङ्लकारे परिवर्तयत। Leapa कि र्जिकि प्रीक्षक्वंयत। (i) स्वामी चिकतः भवति। (ii) सः उच्चैः वदति। (ii) सः चिकतः भवति। (iii) सः चिकतः भवति।					
4. (क) लङ्लकारे परिवर्तयत। Leapa कि चिर्माल्यवंगत। (i) स्वामी चिकतः भवति। (i) सः चिकतः प्रवित। (ii) सः उच्चैः वदित। (iii) सः चिकतः भवित। (iiii) सः तस्मै पूर्णं धनं ददाति।					
4. (क) लङ्लकारे परिवर्तयत। □ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ □ ○ □ ○ ○ ○ ○ □ ○ □ ○					
4. (क) लङ्लकारे परिवर्तयत। (a) स्वामी चिकतः भवति। (b) स्वामी चिकतः भवित। (c) स्वामी चिकतः करोति। (c) स्वामी चिकतः भवित। (c) स्वामी चिकतः भवित। (c) सः चिकतः भवित। (c) सः तस्मै पूर्ण धनं ददाति। (c) सः तस्मै पूर्ण धनं ददाति। उत्तरम् – 1. उज्वैः। (c) सः दशन्ति। (
4. (क) लङ्लकारे परिवर्तयत। Leap क्रिक्टिप्रांक्षवंयत। (i) स्वामी चिकतः भवति। (ii) सः उच्चैः वदति। (ii) सः उच्चैः वदति। (iii) सः उच्चैः वदति। (iii) सः तस्मै पूर्णं धनं ददाति। उत्तरम् – 1. उच्चैः। 2. चिकतः। 3. (i) एका। (ii) ताः दशन्ति। (ii) एकः।					
4. (क) लङ्लकारे परिवर्तयत। Leam (i) स्वामी चिकतः भवति। (ii) सः उच्चैः वदति। (ii) सः उच्चैः वदति। (iii) सः वक्तः भवति। (iii) सः तस्मै पूर्णं धनं ददाति। उत्तरम् – 1. उच्चैः। 2. चिकतः। 3. (i) एका। (ii) एकः। (ii) ते उद्शटयन्ति। 4. (ii) स्वामी चिकतः अभवत्। (ii) स्वामी चिकतः अभवत्। (ii) स्वामी चिकतः अभवत्।					
4. (क) लङ्लकारे परिवर्तयत। Leap क्रिक्टिप्रांक्षवंयत। (i) स्वामी चिकतः भवति। (ii) सः उच्चैः वदति। (ii) सः उच्चैः वदति। (iii) सः उच्चैः वदति। (iii) सः तस्मै पूर्णं धनं ददाति। उत्तरम् – 1. उच्चैः। 2. चिकतः। 3. (i) एका। (ii) ताः दशन्ति। (ii) एकः।					
4. (क) लङ्लकारे परिवर्तयत। (i) स्वामी चिकतः भवति। (ii) सः उच्चैः वरति। (ii) सः उच्चैः वरति। (iii) सः उच्चैः। उत्तरम् – 1. उच्चैः। 2. चिकतः। 3. (i) एका। (ii) एकः। (ii) एकः। (ii) वे उद्घाटयन्ति। (ii) सः उच्चैः अवदत्। (ii) सः विकतः भवति। (iii) वे उद्घाटयन्ति। (iii) सः उच्चैः अवदत्। (iii) सः विकतः भविव्यति। (iii) सः विकतः भविव्यति। (iii) सः उच्चैः अवदत्। (iii) सः तस्मै पूर्णं धनं दास्यति।					
4. (क) लङ्लकारे परिवर्तयत। (i) स्वामी चिकतः भवति। (ii) सः उच्चैः वरति। (ii) सः चिकतः भवति। (iii) सः चिकतः भवति। (iii) सः वक्तैः। 3. (i) एका। (ii) एकः। (ii) एकः। (ii) सः उच्चैः अवदत्। (ii) सः वक्तिः भवित। (ii) एकः। (iii) सः उच्चैः अवदत्। (iii) सः वक्तैः भविष्यति। (iii) सः वक्तैः भविष्यति। (iii) सः वक्तैः भविष्यति।					
4. (क) लङ्लकारे परिवर्तयत। (i) स्वामी चिकतः भवति। (ii) सः उच्चैः वरति। (iii) सः उच्चैः वरति। (iii) सः चिकतः भवति। (iii) सः चिकतः भवति। (iii) सः तस्मै पूर्णं धनं ददाति। उत्तरम् – 1. उच्चैः। 2. चिकतः। 3. (i) एका। (ii) एकः। (ii) तं दद्शाट्यन्ति। (iii) सः उच्चैः अवदत्। (iii) सः चिकतः भविष्यति। (iii) सः विकतः कियापवं वित्वा वाक्यपूर्ति कुरुत– (मञ्जूषा की सहायता से उचित					
4. (क) लङ्लकारे परिवर्तयत। (i) स्वामी चिकतः भवति। (ii) सः उच्चैः वदित। (iii) सः उच्चैः वदित। (iii) सः चकतः भवति। (iii) सः तस्मै पूर्णं धनं ददाति। उत्तरम् – 1. उच्चैः। 2. चकितः। 3. (i) एका। (ii) एकः। (ii) एकः। (ii) तं उद्शाटयन्ति। (iii) सः उच्चैः अवदत्। (iii) सः चकितः भविष्यति। (iii) सः उच्चैः अवदत्। (iii) सः चकितः भविष्यति। (iii) सः चकतः भविष्यति।					
4. (क) लङ्लकारे परिवर्तयत। Leaja @ किटिं प्रीकृषंयत। (i) स्वामी चिकतः भवति। (ii) सः उच्चैः वदति। (ii) सः चिकतः भवति। (iii) सः चिकतः भवति। (iii) सः तस्मै पूर्णं धनं दराति। उत्तरम् – 1. उच्चैः। 2. चिकतः। 3. (i) एका। (ii) एकः। (ii) एकः। (iii) तः दशन्ति। (iii) एकः। (iii) सः चिकतः भविष्यति। (iii) सः चिकतः भविष्यति। (iii) सः उच्चैः अवदत्। (iii) सः वक्तः भविष्यति। (iiii) सः तस्मै पूर्णं धनं दास्यति। (iiii) सः उच्चैः अवदत्। (iiii) सः तस्मै पूर्णं धनं दास्यति। (iiii) सः तस्मै पूर्णं धनं दास्यति। (iiii) सः तस्मै पूर्णं धनं दास्यति। (iiiii) सः तस्मै पूर्णं धनं दास्यति। (iiiiii) सः तस्मै पूर्णं धनं दास्यति। (iiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiii					
4. (क) लङ्लकारे परिवर्तयत। Leaja @ किटिं प्रीकृषंयत। (i) स्वामी चिकतः भवति। (ii) सः उच्चैः वदति। (ii) सः चिकतः भवति। (iii) सः चिकतः भवति। (iii) सः तस्मै पूर्णं धनं दराति। उत्तरम् – 1. उच्चैः। 2. चिकतः। 3. (i) एका। (ii) एकः। (ii) एकः। (iii) तः दशन्ति। (iii) एकः। (iii) सः चिकतः भविष्यति। (iii) सः चिकतः भविष्यति। (iii) सः उच्चैः अवदत्। (iii) सः वक्तः भविष्यति। (iiii) सः तस्मै पूर्णं धनं दास्यति। (iiii) सः उच्चैः अवदत्। (iiii) सः तस्मै पूर्णं धनं दास्यति। (iiii) सः तस्मै पूर्णं धनं दास्यति। (iiii) सः तस्मै पूर्णं धनं दास्यति। (iiiii) सः तस्मै पूर्णं धनं दास्यति। (iiiiii) सः तस्मै पूर्णं धनं दास्यति। (iiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiii					
4. (क) लङ्लकारे परिवर्तयत। Lealal @ किटिं प्रीकृषंयत। (i) स्वामी चिकतः भवति। (ii) सः उच्चैः वदति। (ii) सः चिकतः भवति। (iii) सः चिकतः भवति। (iii) सः तस्मै पूर्णं धनं दत्तति। उत्तरम् – 1. उच्चैः। 2. चिकतः। 3. (i) एका। (ii) एकः। (ii) एकः। (iii) तः दशन्ति। (iii) सः चिकतः अभवत्। (iii) सः चिकतः भविष्यति। (iii) सः उच्चैः अवदत्। (iii) सः चिकतः भविष्यति।					
4. (क) लङ्लकारे परिवर्तयत। Leallal @ @ @ E प्रीक्षंवत। (i) स्वामी चिकत: भवति। (ii) सः उच्चेः वदति। (ii) सः चकतः भवति। (iii) सः तस्मै पूर्ण धनं ददाति। उत्तरम् – 1. उच्चैः: 2. चिकतः। 3. (i) एका। (ii) एकः। (ii) तं उद्शाटयन्ति। (iii) सः उच्चेः अवदत्। (iii) सः चकतः भविष्यति। (iii) सः उच्चेः अवदत्। (iii) सः विकतः भविष्यति। (iii) सः उच्चेः अवदत्। (iii) सः विकतः भविष्यति। (iii) सः वर्ष्यते। (iii) सः वर्ष्यते। (iii) सः वर्ष्यते। (iii) सः वर्ष्यते। (iiii) सः वर्ष्यते। (iiii) सः वर्ष्यते। (iiii) सः वर्ष्यते। (iiiii) सः वर्ष्यते। (iiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiiii					
4. (क) लङ्लकारे परिवर्तयत। (i) स्वामी चिकतः भवति। (ii) सः उच्चैः वरति। (ii) सः उच्चैः वरति। (iii) सः उच्चैः। उत्तरम्—1. उच्चैः। 2. चिकतः। 3. (i) एका। (ii) तः दशन्त। (ii) एकः। (ii) तः दशन्त। (iii) सः उच्चैः। 4. (i) स्वामी चिकतः अभवत्। (ii) सः विकतः भविष्यति। (iii) सः उच्चैः। 4. (i) स्वामी चिकतः अभवत्। (ii) सः विकतः भविष्यति। (iii) सः उच्चैः। 4. (i) स्वामी चिकतः अभवत्। (iii) सः विकतः भविष्यति। (iii) सः विकतः। (i					
4. (क) लङ्लकारे परिवर्तयत। (i) स्वामी चिकतः भवति। (ii) सः उच्चेः वदित। (iii) सः उच्चेः वदित। (iii) सः उच्चेः वदित। (iii) सः तस्मै पूर्णं धनं ददाति। उत्तरम् – 1. उच्चैः। 2. चिकतः। 3. (i) एका। (ii) एकः। (ii) तं उद्शाटयन्ति। 4. (i) स्वामी चिकतः अभवत्। (ii) सः उच्चेः अवदत्। (ii) सः तस्मै पूर्णं धनं ददाति। 4. (i) स्वामी चिकतः अभवत्। (ii) सः चिकतः भविष्यति। (iii) सः उच्चेः अवदत्। (iii) सः तस्मै पूर्णं धनं दास्यति। (iii) सः तस्मै पूर्णं धनं तस्यति। (iii) सः तस्यति। (iii) सः तस्मै पूर्णं धनं तस्यति। (iii) सः तस्मै पूर्णं धनं तस्यति। (iii) सः तस्यति। (iii) सः तस्मै पूर्णं धनं तस्यति। (iii) सः त					
4. (क) लङ्लकारे परिवर्तयत। (i) स्वामी चिकतः भवति। (ii) सः उच्चैः वरति। (ii) सः चिकतः भवति। (iii) सः चिकतः भवति। (iii) सः चिकतः भवति। (iii) सः चिकतः भवति। (iii) सः तस्मै पूर्णं धनं दरति। उत्तरम्-1. उच्चैः! 2. चिकतः। 3. (i) एका। (ii) तं उद्शाटयन्ति। 4. (i) स्थामी चिकतः अभवत्। (ii) सः चिकतः भविष्यति। (ii) सः उच्चैः अवदत्। (ii) सः चिकतः भविष्यति। (iii) सः उच्चैः अवदत्। (iii) सः विकतः भविष्यति। (iii) सः विकतः भविष्यति। (iii) सः चिकतः भविष्यति। (iii) सः वर्ष्यते। (iii) सः वर्ष्यते। (iii) सः वर्ष्यते। (iii) सः वर्ष्यति। (iiii) सः वर्ष्यति। (iiii) सः तस्मै पूर्णं धनं दास्यति। (iiii) सः वर्ष्यति। (iii) सः वर्ष्यति। (iii) सः वर्यति। (iii) सः वर्ष्यति। (iii) सः वर्यति। (iii) सः वर्यति। (iii) सः वर्षति। (iii) सः वर्यति। (iii) सः वर्यति। (
4. (क) लङ्लकारे परिवर्तयत। (i) स्वामी चिकतः भवति। (ii) सः उच्चैः वरति। (iii) सः उच्चैः वरति। (iii) सः चिकतः भवति। (iii) सः चिकतः भवति। (iii) सः तस्मै पूर्णं धनं रदाति। उत्तरम्-1. उच्चैः! 2. चिकतः। 3. (i) एका। (ii) तं दश्चारचित्। (ii) एकः। (ii) तं दश्चारचित्। 4. (i) स्वामी चिकतः अभवत्। (ii) सः चिकतः भविष्यति। (iii) सः उच्चैः अवदत्। (ii) सः चिकतः भविष्यति। (iii) सः चिकतः । (iii) सः चिकतः । (iii) सः चिष्यति। (iii) सः चिकतः । (iii) सः चिकतः। (iii) सः चिष्यति। (iii) सः चिकतः। (iii) सः चकतः। (iii) सः चिकतः। (i					
4. (क) लङ्लकारे परिवर्तयत। (i) स्वामी चिकतः भवति। (ii) सः उच्चेः वदित। (iii) सः उच्चेः वदित। (iii) सः उच्चेः वदित। (iii) सः विकतः भवति। (iii) सः तस्मै पूर्ण धनं ददाति। उत्तरम् – 1. उच्चैः। 2. चिकतः। 3. (i) एका। (ii) एकः। (ii) तं उद्शाटयन्ति। (iii) सः उच्चेः अवदत्। (iii) सः विकतः भवित्या 4. (i) स्वामी चिकतः अभवत्। (ii) सः चिकतः भवित्या (ii) सः विकतः भवित्या (iii) सः विक्या (iii) सः विकतः भवित्या (iii) सः विकतः भवित्या (iii) सः विक्या (iii) सः विकतः भवित्या (iii) सः विकतः भवित्य (iii) सः विकतः स्वत्यवित्य (iii) सः विकतः स्वत्यवित्य (iii) सः विकतः स्वत्यवित्यवित्यवित्यवित्यवित्यवित्यवित्य					
4. (क) लङ्लकारे परिवर्तयत। (i) स्वामी चिकतः भवति। (ii) सः उच्चेः वदति। (iii) सः उच्चेः वदति। (iii) सः विकतः भवति। (iii) सः विकतः भवति। (iii) सः तस्मै पूर्ण धनं ददाति। उत्तरम् – 1. उच्चैः। 2. चिकतः। 3. (i) एका। (ii) एकः। (ii) तं उद्शाटयन्ति। (iii) सः उच्चेः अवदत्। (iii) सः विकतः भविष्यति। (iii) सः उच्चेः अवदत्। (iii) सः विकतः भविष्यति। (iii) सः विष्यति। (iii) सः विकतः भविष्यति। (iii) सः विष्यति। (iii) सः विकतः भविष्यति। (iii) सः विकतः भविष्यति। (iii) सः विकतः भविष्यति। (iii) सः विकतः भविष्यति। (iii) सः विष्यति। (iii) सः विष्यति। (iii) सः व्यवित्वति। (व्यव्वकारे) (व्यव्वकारे)					
4. (क) लङ्लकारे परिवर्तयत। (i) स्वामी चिकतः भवति। (ii) सः उच्चैः वदति। (iii) सः उच्चैः वदति। (iii) सः चकितः भवति। (iii) सः चकितः भवति। (iii) सः तस्मै पूर्ण धनं ददाति। उत्तरम्—1. उच्चैः: 2. चिकतः। 3. (i) एका। (ii) एकः। (ii) तं उद्शाटयन्ति। (iii) सः उच्चैः अवदत्। (iii) सः चकितः भविष्यति। (iii) सः उच्चैः अवदत्। (iii) सः चकितः भविष्यति। (iii) सः चक्चैः अवदत्। (iii) सः चकितः भविष्यति। (iii) सः चक्चैः भविष्यति। (iii) सः चक्चैं। (iii) सः चक्चें। (iii)					
4. (क) लङ्लकारे परिवर्तयत। (i) स्वामी चिकतः भवति। (ii) सः उच्चैः वरति। (ii) सः उच्चैः वरति। (iii) सः उच्चैः। 2. चिकतः। 3. (i) एका। (ii) तं उद्शाटयन्ति। (iii) एकः। 4. (i) स्वामी चिकतः अभवत्। (ii) तं उद्शाटयन्ति। 4. (i) स्वामी चिकतः अभवत्। (ii) सः उच्चैः अवदत्। (ii) सः विकतः भविष्यति। (iii) सः उच्चैः अवदत्। (ii) सः विकतः भविष्यति। (iii) सः उच्चैः अवदत्। (iii) सः विकतः भविष्यति। (iii) सः वस्तै अवदत्। (iii) सः वस्तै पूर्ण धनं दास्यति। (iii) सः तस्मै पूर्ण धनं दास्यति। एतत् श्रुत्वा अजीजः वस्तुद्वयम्। आनेत् । । सः इतस्ततः । । जनान् । । परं पफलतां नैव । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।					
4. (क) लङ्लकारे परिवर्तयत। (i) स्वामी चिकतः भवति। (ii) सः उच्चैः वरति। (ii) सः उच्चैः वरति। (iii) सः उच्चैः वरति। (iii) सः विकतः भवति। (iii) सः विकतः भवति। (iii) सः विकतः। 3. (i) एका। (ii) तः दशति। (ii) एकः। 4. (i) स्वामी चिकतः अभवत्। (ii) सः विकतः भविष्यति। (iii) सः उच्चैः अवदत्। (ii) सः विकतः भविष्यति। (iii) सः उच्चैः अवदत्। (iii) सः विकतः भविष्यति। एतत् श्रुत्वा अजीजः वस्तुद्वम्। आनेत् ।। सः इतस्ततः ।। जनान् ।। परं सफलतां नैव ।। परं सफलतां निव ।। परं सफलतां ।। परं सफ					
4. (क) लङ्लकारे परिवर्तयत। (i) स्वामी चिकतः भवति। (ii) सः उच्चैः वरति। (ii) सः उच्चैः वरति। (iii) सः उच्चैः। 2. चिकतः। 3. (i) एका। (ii) तं उद्शाटयन्ति। (iii) एकः। 4. (i) स्वामी चिकतः अभवत्। (ii) तं उद्शाटयन्ति। 4. (i) स्वामी चिकतः अभवत्। (ii) सः उच्चैः अवदत्। (ii) सः विकतः भविष्यति। (iii) सः उच्चैः अवदत्। (ii) सः विकतः भविष्यति। (iii) सः उच्चैः अवदत्। (iii) सः विकतः भविष्यति। (iii) सः वस्तै अवदत्। (iii) सः वस्तै पूर्ण धनं दास्यति। (iii) सः तस्मै पूर्ण धनं दास्यति। एतत् श्रुत्वा अजीजः वस्तुद्वयम्। आनेत् । । सः इतस्ततः । । जनान् । । परं पफलतां नैव । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।					
4. (क) लङ्लकारे परिवर्तयत। (i) स्वामी चिकतः प्रवति। (ii) सः उच्चैः वरति। (iii) सः वर्षकतः प्रवति। (iii) सः वर्षकतः प्रवति। (iii) सः वर्षकतः प्रवति। (iiii) सः वर्षकतः प्रवति। (iiii) सः तस्मै पूर्णं धनं दराति। उत्तरम् - 1. उन्नैः। 2. चिकतः। 3. (i) एका। (ii) एकः। (iii) तः दशनित। (iii) सः वर्षकतः प्रविवर्धति। (iii) सः उच्चैः अवदत्। (iii) सः वर्षकतः प्रविवर्धति। (iii) सः उच्चैः अवदत्। (iii) सः तस्मै पूर्णं धनं दास्यति। (iii) सः वर्षकतः प्रविवर्धति। (iii) सः वर्षकतः प्रविवर्धति। (iii) सः वर्षकतः प्रविवर्धति। (iii) सः वर्षकतः प्रविवर्धति। (iii) सः तस्मै पूर्णं धनं दास्यति। (iii) सः तस्मै पूर्णं धनं दास्यति। (iii) सः त्रकता प्रविवर्धति। (iii) सः त्रकता प्रवर्धति। (iii) सः त्रकता प्रवर्धति। (iii) सः त्रकता प्रवर्धति। (iii) सः त्रकता प्रवर्धति। (iii) अर्जविद्यस्य सर्व धनं दास्यि।। (iii) अर्जविद्यस्य स्वर्धनः आर्यति। (iii) अर्जविद्यस्य स्वर्धनः आर्यति। (iii) अर्जविद्यस्य सर्व धनं दास्यि।। (iii) अर्जविद्यस्य सर्व धनं दास्यि।। (iii) अर्जविद्यस्य सर्व धनं दास्यि।। (iii) अर्जविद्यस्य सर्व धनं दास्यति। (iii) अर्जविद्यस्य सर्व धनं दास्यति। (iii) अर्जविद्यस्य सर्व धनं दास्यति। (iii) अर्जविद्यस्य सर्व धनं दर्दामि।					
4. (क) लङ्लकारे परिवर्तयत। (i) स्वामी चिकतः पवित। (ii) सः उच्चैः वरित। (ii) सः विकतः पवित। (iii) सः विकतः पवित। (iii) सः विकतः पवित। (iii) सः विकतः पवित। (iii) सः तस्मै पूर्णं धनं ददाति। उत्तरम् - 1. उच्चैः 2. चिकतः। 3. (i) एका। (ii) एकः। (ii) एकः। (ii) स्वामी चिकतः अभवत। (ii) सः वर्षतः पविव्यति। (ii) सः वर्षतः पविव्यति। (iii) सः वर्षतः पव्यति। (iii) सः वर्षतः प्रव्यति। (iii) सः वर्षतः प्रव्यति। (iii) सः वर्षतः प्रव्यति। (iii) सः वर्षतः प्रव्यति। (iii) सः वर्षतः पर्यति। (iii) सः वर्षतः पर्यति। (iii) सः वर्षतः पर्यति। (iii) सः वर्षतः वर्षतः भवति। (iii) सः वर्षतः वर्षतः अववतः। (iii) सः वर्षतः पर्यति। (iii) सः वर्षतः पर्यति। (iii) सः वर्षतः वर्षतः अववतः। (व्यः लकारे) उत्तरम् (iii) अवीवः स्वर्षतः अववतः। (iii) सः अववारं वर्षत्रमः।					

बहुविकल्पेन्छआता CBSE.in

(1) उचितन विकल्पन रिक्तस्थानानि पूरयत- (उचित विकल्प द्वारा रिक्त स्थान भारए- Fill			
in the blanks with the correct option.)			
(क) (i) सहसा एका "" নিৰ্गच्छति। (वृद्धा, पेटिका, मधुमक्षिका)			
(ii) अजीज: """ आनेतुं निर्गच्छति। (लघुपात्रम्, वस्तुद्वयम्, धनम्)			
(iii) सः ताम् सर्वा श्रावयति। (कथाम्, वृद्धाम्, व्यथाम्)			
(iv) कुत्रचित् एका वृद्धा। (मिलति, कथयित, ददाति)			
(v) स्वामी पेटिकाम् उद्घाटयित। (उच्चै:, शनै: शनै:, एकदा)			
उत्तरम् – (i) मधुमक्षिका, (ii) वस्तुद्वयम्, (iii) व्यथाम्, (iv) मिलति, (v) शनै: शनैः।			
(ख) (i) अजीज: स्वामिन: """ लीन: आसीत्। (सेवा, सेवाम्, सेवायाम्)			
(ii) सः चिंतयित """" धनं सः नैव प्राप्स्यित। (परिश्रमी, परिश्रमस्य, परिश्रमः)			
(iii)			
(iv) अजीजं स्वामी चिकतः भवति। (दृष्ट्वा, द्रष्टुम्, पश्यित)			
(ए) मधुमक्षिका दशति। (हस्त:, हस्तम्, हस्तेन)			
उत्तरम् – (i) सेवायाम्, (ii) परिश्रमस्य, (iii) एका, (iv) दृष्ट्वा, (v) इस्तम्।			
(ग) (i) अजीज: गृहं गन्तुम् अवकाशं। (पृच्छिति, वाञ्छिति, मिलिति)			
(ii) सः सफलतां नैव। (पश्यित, परिभ्रमति, प्राप्नोति)			
(iii) प्रथयं सः एकं लघुपात्रम्। (निर्गच्छति, ददातिं, उद्घाटयति)			
(iv) अन्या मिक्षका ललाटे। (ददाति, दशीत, चीत्करोति)			
(v) कुत्रचित् एका वृद्धा। (श्रावयित, चिन्तयित, मिलिति)			
उत्तरम्— (i) बाञ्छति (ii) प्रोप्रोति (iii) उद्घाटयति (iv) दशीत (v) मिलति।			
000			
, · · · ·			
Learn CBSE. in Res WI: T W			
च्या । ज्या अहह आः च			

******* END *******